नईदुनिया



इजरायल के पास 90 परमाणु बम, बना रहा न्यूक्लियर पनडुब्बियां....लेकिन अमेरिका चुप्प

तेलअवीव

ताजा रिपोर्ट के अनुसार, इजरायल के पास करीब 90 परमाणु हथियार हैं और 2021 के बाद से उसकी परमाणु वारहेड की संख्या में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई है। हालांकि, सैटेलाइट तस्वीरों और खुफिया आकलन से पता चलता है कि इजरायल इन परमाणु हथियारों की डिलीवरी के लिए नए कैरियर सिस्टम, जैसे फाइटर जेट्स और सीक्रेट न्यूक्लियर पनडुब्बियों पर तेजी से काम कर रहा है। यह जानकारी एक रिपोर्ट में सामने आई है। सवाल यह उठता है कि जिस अमेरिका ने ईरान को परमाणु बम बनाने के आरोप में प्रतिबंधों से जकड़ दिया, वहीं इजरायल के परमाणु कार्यक्रम पर चुप्पी क्यों साधे हुए है

रिपोर्ट के मुताबिक, इजरायल के परमाणु हथियारों के बारे में जानकारी जुटाना अत्यंत मुश्किल रहा है, क्योंकि वह न परमाणु हथियार होने की बात कबूल करता है और न ही इस बात से इंकार करता है। इस नीति को परमाणु अस्पष्टता कहा जाता है। 1986 में, पूर्व न्यूक्लियर साइंटिस्ट ने इंटरव्यू देकर इजरायल के परमाणु कार्यक्रम का खुलासा किया था, जिसके बाद उन्हें अगवा कर 18 सालों तक जेल में रखा गया। कई इजरायली अधिकारियों ने अतीत में विरोधाभासी बयान दिए है, जहां प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा था कि इजरायल मध्य पूर्व में पहला परमाणु हथियार वाला देश नहीं होगा, वहीं पूर्व राष्ट्रपति एफ्राइम काट्ज़िर और रक्षा मंत्री मोशे दयान ने संकेत दिया था कि उनके पास बहुत कम समय में इन्हें तैयार करने की क्षमता है। पूर्व प्रधानमंत्री शिमोन पेरेस ने कहा था कि धोखा देना जरूरी हो सकता है यदि यह जान बचाने के लिए हो।

अमेरिका ने इजरायल के परमाणु कार्यक्रम पर दशकों तक पर्दा डालने में मदद की है। अमेरिका का दावा है कि उन्हें इजरायल के नेगेव न्यूक्लियर रिसर्च सेंटर के बारे में एक दशक तक पता नहीं था, जबकि इसका निर्माण 1958 में शुरू हुआ था। इजरायल ने अमेरिका को बताया था कि यह भवन आम लोगों के लिए और टेक्सटाइल फैक्ट्री के लिए बन रहे हैं। 1991 में खोजी पत्रकार की किताब द सैमसन आप्शन ने इस धोखे का खुलासा किया था। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि अमेरिका ने जानबूझकर इस पर आंखें बंद रखीं। 1979 में, अमेरिका के सर्विलांस सैटेलाइट वेला 6911 ने हिंद महासागर के दक्षिणी हिस्से में एक परमाणु परीक्षण की दोहरी चमक देखी थी, लेकिन अमेरिकी अधिकारियों ने इजरायल के साथ किसी राजनयिक टकराव से बचने के लिए इसकी ज्यादा जांच नहीं की।

अब इस दशकों पुरानी चुप्पी पर सवाल उठ रहे हैं। टेक्सास के जोकिन कास्त्रो के नेतृत्व में डेमोक्रेटिक पार्टी के 30 सांसदों ने अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन को चिट्ठी लिखी है, जिसमें इजरायल के परमाणु हथियारों पर चुप्पी तोड़ने की मांग की गई है। सांसदों ने लिखा है, हम एक इसतरह के देश के साथ मिलकर लड़ रहे हैं जिसके संभावित परमाणु कार्यक्रम को आधिकारिक तौर पर अमेरिकी सरकारें स्वीकार ही नहीं करती हैं। हालांकि, अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने जवाब में कहा कि इस बारे में इजरायल सरकार से संपर्क करना चाहिए।

न्यूज ब्रीफ

बांग्लादेश में बीएनपी नेताओं के घर, दफ्तर, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़, आगजनी



ढाका (बांग्लादेश)। देश के गोपालगंज के तुंगीपाड़ा उपजिला में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) और उससे जुड़े संगठनों के कई नेताओं और समर्थकों के घरों, पार्टी कार्यालयों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ की गई और उनमें आग लगा दी गई। बीएनपी नेताओं का आरोप है कि दोपहर से उपजिला के अलग-अलग इलाकों में प्रतिबंधित अवामी लीग, जुबो लीग और छात्र लीग के कार्यकर्ताओं ने ये हमले किए। ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, दोपहर करीब दो बजे डूमुरिया यूनियन के पाकुरतिया बाजार में अवामी लीग और उससे जुड़े संगठनों के कार्यकर्ताओं ने जुलूस निकाला। इसके बाद उन्होंने पाकुरतिया मदरसे के पास बीएनपी समर्थकों के दो व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में आग लगा दी। दोपहर करीब 3:30 बजे एक दूसरा जुलूस निकला। इस दौरान पाटगाती बाजार में जुबो दल के कार्यालय में तोड़फोड़ करने के बाद उसमें आग लगा दी गई। बताया गया है कि शाम करीब चार बजे हमलावरों ने श्रीरामकांडी में उपजिला स्वेच्छासेबक दल के पूर्व संयोजक जसीम शेख के घर को आग लगाकर फूंक दिया। इसके एक घंटे बाद गवरडांगा के चौरंगी चौराहे पर बीएनपी समर्थक महमूद बिस्वास की एक दुकान में आग लगा दी गई। उसी समय, तुंगीपाड़ा बाजार में नगर बीएनपी के संगठनात्मक सचिव अबू जफर खान के एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान में भी तोड़फोड़ की गई। बाद में, रात करीब आठ बजे पाटगाती बाजार में नगर बीएनपी के अध्यक्ष इमदाद मोल्ला के घर में तोड़फोड़ की गई ।

आतंक के आका हाफिज और अजहर को सता रहा भारत का डर, आईएसआई ने बदले अपने ठिया-ठिकाने



इस्लामाबाद। भारत के खिलाफ आतंक की साजिश रचने वाले हाफिज सईद और मसूद अजहर इन दिनों गहरे खौफ में जी रहे हैं। खुफिया सूत्रों के हवाले से मिली जानकारी के अनुसार, पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने जान के खतरे को देखते हुए इन दोनों कुख्यात आतंकियों को नए ठिकानों पर स्थानांतरित कर दिया है। रिपोर्टों से पता चलता है कि इन खूंखार आतंकियों के ठिकाने बदलने के पीछे भारत की तरफ से होने वाले हमले का डर बताया जा रहा है। आईएसआई को डर है कि आपरेशन सिंदूर की तरह सीधे इमारत पर हमला या अननोन गनमैन (अज्ञात हमलावर) के जरिए इन दोनों को निशाना बनाया जा सकता है। आईएसआई ने पिछले हफ्ते ही दोनों की लोकेशन में बदलाव किया है। इसमें लश्कर-ए-तैयबा के सरगना हाफिज सईद को लाहौर से रावलपिंडी स्थानांतरित किया गया है। उसे यहां पाकिस्तानी सेना के मुख्यालय के पास किसी खुफिया जगह पर रखा गया है। दूसरी तरफ जैश-ए-मोहम्मद के सरगना मसूद अजहर को भी सिंध प्रांत ले जाया गया है। सूत्रों का कहना है कि पाकिस्तान में मौजूद इन आतंकियों को अब अज्ञात हमलावरों का डर सता रहा है, क्योंकि पिछले कुछ समय से पाकिस्तान में भारत के दुश्मनों का लगातार सफाया किया जा रहा है।

ब्रिटिस सरकार ने भारत को दिया बड़ा झटका, भगोड़ों को बनाया जा रहा ब्रिटिश नागरिक

लंदन। भारत में भगोड़ा घोषित इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के संस्थापक ललित मोदी अब ब्रिटिश नागरिक बन गए हैं। ब्रिटेन सरकार के इस कदम को भारत के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। खास बात यह है कि विजय माल्या को भी ब्रिटिश नागरिकता दिए जाने की कवायद शुरू होने की चर्चा है। दूसरी ओर, भारत सरकार दोनों को वापस लाने के लिए लंबे समय से प्रत्यर्पण की कोशिश कर रही है। हालांकि ललित मोदी और विजय माल्या की विदेशी नागरिकता का मुद्दा इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत दोनों को वापस लाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, किसी व्यक्ति की नागरिकता बदलने से उसके खिलाफ चल रही आपराधिक जांच या प्रत्यर्पण की प्रक्रिया स्वतः खत्म नहीं होती। प्रत्यर्पण का फैसला संबंधित देशों के कानून, उपलब्ध साक्ष्यों और अदालतों की प्रक्रिया के आधार पर होता है। इसलिए ब्रिटिश नागरिकता मिलने के बावजूद ललित मोदी के भारत लौटने और उनके खिलाफ चल रही कानूनी कार्रवाई का मामला अलग-अलग कानूनी प्रक्रियाओं के तहत ही तय होगा। ललित मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए खुलासा किया कि उन्हें 15 सितंबर 2026 को ब्रिटिश नागरिकता मिल गई थी। उन्होंने बताया कि उनकी भारतीय नागरिकता दो साल पहले ही समाप्त हो गई थी। मार्च 2025 में उन्होंने प्रशांत महासागर के द्वीपीय देश वानुआतु की नागरिकता हासिल की थी, लेकिन बाद में वहां के प्रधानमंत्री ने उनका पासपोर्ट रद्द करवा दिया था। ललित मोदी वर्ष 2010 में भारत छोड़कर लंदन चले गए थे।

चीन ने फोर स्वार्ड्समेन बेड़े में जे-35ए स्टील्थ विमान शामिल किए, तिब्बत में क्या होगा कारगर

बीजिंग

चीन ने अपनी सैन्य रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव कर अपने थ्री स्वार्ड्समेन बेड़े को अब फोर स्वार्ड्समेन में बदल दिया है। इस बड़े रणनीतिक कदम के तहत चीन ने अपने लड़ाकू बेड़े में जे-35ए स्टील्थ फाइटर जेट को शामिल किया है। इसका मुख्य उद्देश्य एक किल चेन नेटवर्क तैयार करना है, जहाँ जे-35ए विमान बिना अपना रडार चालू किए डेटा एकत्र करेगा और जे-10सी तथा जे-16 जैसे विमानों को मिसाइल दागने के लिए सटीक मार्गदर्शन प्रदान करेगा। यह पहल सेंसर फ्यूजन, डेटा युद्ध और भविष्य की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित लड़ाइयों के लिए चीन की तैयारी को दर्शाती है।

चीन की सरकारी मीडिया ने बताया है कि जे-35ए विमान में एवियोनिक्स, सिचुएशनल अवेयरनेस और हथियार एकीकरण में कई महत्वपूर्ण अपग्रेड किए गए हैं। चीन डब्लूयएस-19 नाम से एक नया टर्बोफैन इंजन भी विकसित कर रहा है, जिसे भविष्य में इन विमानों में लगाया जाएगा। फोर स्वार्ड्समेन रणनीति में जे-20 (भारी स्टील्थ फाइटर), जे-35ए (स्टील्थ फाइटर), जे-10सी (मल्टी-रोल एयरक्राफ्ट) और जे-16 (भारी मल्टी-रोल एयरक्राफ्ट) शामिल हैं। यह पांचवीं पीढ़ी के फाइटर जेट और 4.5 पीढ़ी के लड़ाकू विमानों का एक मिश्रण है, जो युद्ध के समय एकीकृत रूप से काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

हालांकि, कागजों पर यह रणनीति बेहद प्रभावी दिखती है, लेकिन तिब्बत जैसे ऊंचे और चुनौतीपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों में क्रियान्वित करना चीन के लिए मुश्किल भरा साबित हो सकता है। भारतीय वायुसेना के पूर्व पायलट के अनुसार, जे-20 की इंजन क्षमता पर अभी भी सवाल हैं क्योंकि इसमें डब्लयूएस-15 इंजन के अभाव में पुराने इंजन लगाए गए हैं। ऐसी स्थिति में स्टील्थ विमान अपनी पूरी क्षमता से भारी पेलोड के साथ उड़ान नहीं भर पाते और बिना आफ्टरबर्नर के सुपरसोनिक गति में क्रूज करने में उन्हें काफी दिक्कतें होती हैं।

वायुसेना के पूर्व पायलट ने बताया कि तिब्बत में ऊंची पहाड़ियों और कम वायु घनत्व (ल्हासा, शिगात्से जैसे एयरबेस समुद्र तल से 12-14 हजार फीट की ऊंचाई पर हैं) के कारण फाइटर जेट्स के बीच तालमेल बनाना बेहद मुश्किल होता है। जे-35ए की स्टील्थ कोटिंग भी अत्यधिक ठंड और बर्फबारी में जल्द कमजोर पड़ सकती है। किल चेन नेटवर्क के लिए आवश्यक हाई-स्पीड डेटा लिंक द्वारा हिमालय की ऊंची चोटियों के बीच रेडियो सिग्नल भेजना भी एक बड़ी चुनौती है।

इसके विपरीत, भारत के पास कई रणनीतिक लाभ हैं। भारतीय विमान मैदानी इलाकों से उड़ान भरते हैं, जिससे उन्हें परिचालन में आसानी होती है। भारत के राफेल और एसयू-30एमकेआई जैसे फाइटर जेट्स इन चुनौतीपूर्ण हालातों में काफी प्रभावी साबित होगा। पूर्व पायलट का कहना है कि भारत ने स्टील्थ विमानों के अभाव में अपनी इलेक्ट्रानिक वारफेयर (ईडब्ल्यू) क्षमताओं को काफी मजबूत किया है। भारत के पास इसतरह के रडार हैं जो चीनी विमानों के बीच के संचार प्रणालियों को जाम कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है, तब चीन की यह महत्वाकांक्षी चौकड़ी पूरी तरह से बिखर सकती है, जिससे उसकी रणनीति को गहरा झटका लगेगा।

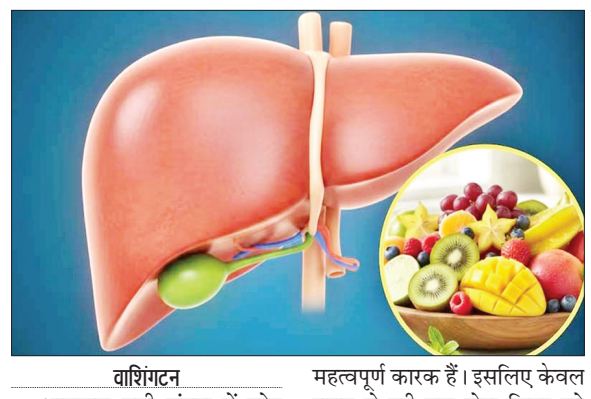


चीन के इंद्रधनुषी पहाड़ अनोखी बनावट के कारण है मशहूर



बीजिंग। चीन के झांगे डेनशिया नेशनल जियोलाजिकल पार्क में मौजूद इंद्रधनुषी पहाड़ अपनी अनोखी बनावट के कारण खास पहचान रखते हैं। इनकी रंगीन परतें दूर से किसी विशाल कालीन जैसी दिखाई देती हैं। इन पहाड़ों को देखकर ऐसा लगता है, जैसे किसी कलाकार ने विशाल कैनवास पर लाल, पीले, नारंगी, हरे और बैंगनी रंगों से खूबसूरत चित्र बना दिया हो। यही वजह है कि इन्हें दुनिया के रेनबो माउंटेन के नाम से जाना जाता है। ये अनोखे पहाड़ चीन के गांसू प्रांत में स्थित हैं। यहां की चट्टानों पर अलग-अलग रंगों की लंबी धारियां दिखाई देती हैं। कहीं लाल रंग की परतें नजर आती हैं, तो कहीं पीले, नारंगी और हरे रंग की लकीरें पहाड़ियों को अनूठा रूप देती हैं। पहाड़ों की यह खूबसूरती सुबह और शाम के समय और भी आकर्षक हो जाती है। सूर्योदय और सूर्यास्त के दौरान जब सूर्य की सुनहरी किरणें इन रंगीन चट्टानों पर पड़ती हैं, तो इनके रंग अधिक चमकदार दिखाई देने लगते हैं। इस समय यहां का नजारा किसी काल्पनिक दुनिया जैसा लगता है। इन पहाड़ों के रंगों के पीछे कोई जादू या कृत्रिम रंग नहीं, बल्कि करोड़ों साल पुरानी भूगर्भीय प्रक्रिया है। लंबे समय तक रेत के पत्थरों और अलग-अलग खनिजों की परतें एक-दूसरे के ऊपर जमा होती रहीं। इन चट्टानों में मौजूद आयरन आक्साइड सहित विभिन्न खनिजों ने इन्हें लाल, पीला और दूसरे रंग प्रदान किए। समय के साथ टेक्टोनिक प्लेटों की हलचल से जमीन की परतों में बदलाव आया और चट्टानों की रंगीन परतें सतह पर दिखाई देने लगीं। इसके बाद हवा और बारिश ने लाखों वर्षों तक इन पहाड़ों को प्राकृतिक रूप से तराशा। इसी प्रक्रिया ने इन्हें आज का अनोखा आकार और रंगीन स्वरूप दिया है। झांगे डेनशिया नेशनल जियोलाजिकल पार्क को देखने के लिए हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। यहां बनाए गए व्यूइंग प्लेटफार्म से लोग इन पहाड़ों की खूबसूरती को अलग-अलग कोणों से देख सकते हैं।

गलत खानपान और शारीरिक गतिविधियों की कमी से हो रहा फैटी लिवर



वाशिंगटन

आजकल बड़ी संख्या में लोग फैटी लिवर की समस्या से प्रभावित हो रहे हैं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल है जो शराब का सेवन नहीं करते। फैटी लिवर के प्रमुख कारणों में गलत खानपान, मोटापा और शारीरिक गतिविधियों की कमी शामिल हैं। फैटी लिवर को पहले मुख्य रूप से दो श्रेणियों में बांटा जाता था।

एक अल्कोहलिक फैटी लिवर, जो शराब के अधिक सेवन से जुड़ा होता है, और दूसरा नान-अल्कोहलिक फैटी लिवर, जो शराब नहीं पीने वाले लोगों में भी हो सकता है। इसे नान-अल्कोहलिक फैटी लिवर डिजीज यानी एनएएफएलडी कहा जाता है। अब इस बीमारी को मेटाबालिक स्वास्थ्य से जुड़े पहलुओं के आधार पर भी समझा जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, शहरों में बदलती जीवनशैली के कारण फैटी लिवर का जोखिम बढ़ रहा है। अधिक तला-भुना और तेल वाला भोजन, जंक फूड, लंबे समय तक एक ही जगह बैठकर काम करना और नियमित व्यायाम न करना इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं। इसके अलावा खून में फैट की मात्रा अधिक होना भी जोखिम बढ़ा सकता है। डायबिटीज, हाई कोलेस्ट्राल और हाई ब्लड प्रेशर से पीड़ित लोगों में भी फैटी लिवर होने की आशंका अधिक हो सकती है। मोटापा और इंसुलिन रेजिस्टेंस भी इस समस्या से जुड़े महत्वपूर्ण कारक हैं। इसलिए केवल शराब से दूरी बना लेना लिवर को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त नहीं है। फैटी लिवर की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि शुरुआती चरण में इसके लक्षण स्पष्ट नहीं होते। कई लोगों को लंबे समय तक पता नहीं चलता कि उनके लिवर में चर्बी जमा हो रही है।

कुछ मामलों में लगातार थकान, पेट के ऊपरी हिस्से में असहजता या दर्द, पेट फूलना और पैरों में सूजन जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। हालांकि, ये लक्षण दूसरी स्वास्थ्य समस्याओं में भी हो सकते हैं। इसलिए जांच के बिना बीमारी की पुष्टि नहीं की जा सकती।

समय रहते पहचान होने पर जीवनशैली में बदलाव से स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। इसके लिए संतुलित आहार लेना, वजन नियंत्रित रखना और नियमित व्यायाम करना जरूरी है। रोजाना कम से कम 30 मिनट पैदल चलना या अपनी क्षमता के अनुसार शारीरिक गतिविधि करना मददगार हो सकता है। जंक फूड और अत्यधिक तेल वाले भोजन से दूरी बनाना भी फायदेमंद है।

समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराने से फैटी लिवर और इससे जुड़े अन्य जोखिमों का पता लगाया जा सकता है। यदि इस समस्या को लंबे समय तक नजरअंदाज किया जाए, तो कुछ लोगों में लिवर की सूजन और नुकसान बढ़ सकता है।

केवल बाथरूम का दरवाजा बंद करना संक्रमण से बचने की गारंटी नहीं



लंदन। बाथरूम का दरवाजा बंद रखना आमतौर पर अच्छी आदत माना जाता है। इससे बदबू बाहर नहीं आती और घर में साफ-सफाई बनी रहती है। लेकिन हालिया शोध इस धारणा पर सवाल उठाते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, फ्लश करने के दौरान टायलेट से बेहद छोटे कण हवा में फैलते हैं। इन्हें एयरोसोल कहा जाता है। इन कणों में बैक्टीरिया और दूसरे सूक्ष्मजीव मौजूद हो सकते हैं, जो कुछ समय तक हवा में बने रह सकते हैं। 2025-2026 के दौरान भवन और पर्यावरण से जुड़ी एक स्टडी में बताया गया कि फ्लश करने पर पैदा होने वाले एयरोसोल बाथरूम के अंदर फैल सकते हैं। यदि कमरे में हवा के आने-जाने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, तो ये कण लंबे समय तक वातावरण में मौजूद रह सकते हैं। ऐसे में लगातार बंद रहने वाला बाथरूम इनके जमा होने की आशंका बढ़ा सकता है। हाल ही में किए गए एक सिमुलेशन अध्ययन में भी कम वेंटिलेशन वाले बंद स्थानों में एयरोसोल कणों के जमा होने की संभावना बताई गई। इसका अर्थ है कि केवल दरवाजा बंद कर देना संक्रमण से बचाव की गारंटी नहीं है। बाथरूम में हवा का सही प्रवाह होना भी जरूरी है। इन सूक्ष्म कणों का असर केवल हवा तक सीमित नहीं रहता।

खैबर पख्तूनख्वा के पांच जिलों में महीने भर के लिए धारा 144 लागू

पेशावर (खैबर पख्तूनख्वा) पाकिस्तान

खैबर पख्तूनख्वा (केपी) के बन्नू, बजौर, लक्की मरवत, स्वाबी और टैंक जिलों के प्रशासन ने एक महीने के लिए धारा 144 लागू कर दी है। यह आदेश कानून-व्यवस्था की मौजूदा स्थिति को देखते हुए जारी किया गया। इन पांच जिलों में से बन्नू, बजौर और टैंक उन 12 जिलों में शामिल हैं, जहां सुरक्षा की गंभीर चुनौतियां हैं और वहां विशेष आपातकालीन उपाय लागू किए गए हैं।

डान अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, बजौर में जिला प्रशासन ने 30 दिनों के लिए सभी तरह की राजनीतिक सभाओं, राज्य के खिलाफ नफरत भरे भाषण (हेट स्पीच) देने और हथियारों के प्रदर्शन पर रोक लगा दी है। बजौर के उपायुक्त अदनान फरीद अफरीदी ने कानून-व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए इन प्रतिबंधों को मंजूरी दी है। उन्होंने कहा कि लोगों की जान-माल की सुरक्षा और शांति बनाए रखने के लिए अतिरिक्त कदम उठाना जरूरी है।

आदेश में कहा गया है कि कानून लागू करने वाली एजेंसियों को किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए अधिक सतर्क रहना होगा। साथ ही, जिले में आने-जाने के रास्तों पर सुरक्षा बढ़ानी होगी और सार्वजनिक स्थानों पर अनधिकृत सभाओं को रोकना होगा। चेतावनी दी गई है कि जो कोई भी इस आदेश का उल्लंघन करेगा, उसे पाकिस्तान दंड संहिता की धारा 188 तहत दंडित किया जाएगा।

अक्टूबर में भी सुरक्षा स्थिति का हवाला देते हुए अधिकारियों ने बजौर में मोटरसाइकिल पर पीछे बैठने पर 10 दिनों के लिए रोक लगा दी थी। बन्नू में वाहनों की खिड़कियों पर काली फिल्म लगाने पर भी रोक है। एक अलग आदेश के अनुसार, बन्नू में भी इसी अवधि के लिए धारा 144 लागू की गई है। इस बीच, स्वाबी में डीसी नसरुल्ला खान ने तत्काल प्रभाव से एक महीने के लिए सार्वजनिक सभाओं, रैलियों, जुलूसों, मार्च और प्रदर्शनों पर रोक लगा दी है। उधर, प्रतिबंध लागू होने के बावजूद जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम-फ़जल के कार्यकर्ताओं ने करनैल शेर खान चौक पर विरोध प्रदर्शन किया।

लक्की मरवत में दोपहिया वाहन पर पीछे बैठने पर भी रोक लगाई गई है। डीसी शाहिद रफीक ने जिले की सीमा के भीतर सार्वजनिक सभाओं, जुलूसों, रैलियों, जमावड़ों और मार्च पर एक महीने के लिए प्रतिबंध लगा दिया है। आदेश के अनुसार, ये प्रतिबंध जिला पुलिस अधिकारी के अनुरोध पर लगाए गए हैं। उधर, टैंक में डीसी जमशेद खान ने एक अधिसूचना जारी कर सार्वजनिक सभाओं, रैलियों और जुलूसों पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। बन्नू के बोर्ड आफ इंटरमीडिएट एंड सेकेंडरी एजुकेशन ने पूरे उत्तरी वजीरिस्तान में इंटरमीडिएट की सालाना परीक्षा स्थगित कर दी है। खैबर पख्तूनख्वा लंबे समय से आतंकवादी हमलों और सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है। पिछले महीने बाजौर में आतंकवादियों ने एक पुलिस चौकी पर हमला किया।



ईरान से तनाव के बीच अमेरिका ने तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर मिडिल ईस्ट भेजा

वाशिंगटन (अमेरिका)

संयुक्त राज्य अमेरिका ने ईरान के साथ बढ़ते तनाव के बीच अपना तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट मध्य पूर्व (मिडिल ईस्ट) भेजा है। इसके साथ ही मिडिल ईस्ट में अमेरिका के तीन एयरक्राफ्ट कैरियर स्ट्राइक ग्रुप तैनात हो गए हैं। इससे मिडिल ईस्ट में अमेरिका की सैन्य मौजूदगी और मजबूत हो गई है।

एक्सिओस, सीबीएस न्यूज और अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, रूजवेल्ट अमेरिकी सेना की सेंट्रल कमांड के क्षेत्र में पहुंचा। संयुक्त राज्य अमेरिका के दो एयरक्राफ्ट कैरियर इस क्षेत्र में पहले से काम कर रहे थे। अब थियोडोर रूजवेल्ट के पहुंचने से इनकी संख्या तीन हो गई है। एयरक्राफ्ट कैरियर समुद्र में बड़े सैन्य अड्डे की तरह होता है। इससे लड़ाकू विमान उड़ान भर सकते हैं और सैन्य अभियान चलाए जा सकते हैं। इसके साथ युद्धपोतों का एक समूह भी रहता है, जिसे कैरियर स्ट्राइक ग्रुप कहा जाता है।

थियोडोर रूजवेल्ट को अमेरिका ने ऐसे समय पर भेजा है, जब उसका ईरान के साथ तनाव बढ़ रहा है। ईरान ने सप्ताहांत दावा किया कि उसने बहरीन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमला किया है। ईरान ने शुक्रवार को दावा किया था कि उसने बहरीन में अमेरिका के शुरुआती चेतावनी देने वाले रडार सिस्टम को निशाना बनाया। हालांकि, अमेरिकी सेना ने रडार सिस्टम को नुकसान पहुंचने के ईरान के दावे को खारिज कर दिया। अमेरिका ने कहा कि उसकी सेना ने बहरीन की ओर बढ़ रहे ईरान के दो ड्रोन को बीच रास्ते में ही रोक लिया था।

इस तीसरे एयरक्राफ्ट कैरियर के पहुंचने की पुष्टि के बावजूद अमेरिकी रक्षा विभाग (पेंटागन) और अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) ने इसकी तैनाती की समय सीमा की आधिकारिक जानकारी नहीं दी है। सेंटकाम मिडिल ईस्ट में अमेरिकी सेना के अभियानों की निगरानी करता है। फिलहाल यह साफ नहीं है कि अमेरिका अपने तीनों एयरक्राफ्ट कैरियर इस क्षेत्र में कितने समय तक तैनात रखेगा। मध्य पूर्व में थियोडोर रूजवेल्ट के साथ अब यूएसएस जार्ज एच.डब्ल्यू. बुश और यूएसएस जार्ज वाशिंगटन मौजूद हैं।



ईरान के कानूनी और अंतरराष्ट्रीय मामलों के उप विदेशमंत्री काजेम गरीबाबादी का कहना है कि तेहरान अमेरिका के पहले हमला करने का इंतजार नहीं करेगा। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि हो सकता है कि वाशिंगटन कूटनीति के जरिए समय खींच रहा हो, ताकि वह एक और हमले की तैयारी कर सके।

बहरीन में अमेरिकी दूतावास ने वहां मौजूद अपने नागरिकों के लिए एक सुरक्षा अलर्ट जारी किया है। इसमें उन्हें ईरान और हूती की ओर से होने वाले हमलों के खतरे के प्रति आगाह किया गया है। यह अलर्ट तब आया है जब मनामा ने कहा कि उसके एयर डिफेंस सिस्टम ने ईरानी हमलों को नाकाम कर दिया।

मनामा ने इन हमलों को तेहरान की सुनियोजित आक्रामकता का हिस्सा बताया है। ईरान की नौसेना का कहना है कि होर्मुज जलडमरूमध्य में दो टैंकर नौसैनिक माइन्स (समुद्री बारूदी सुरंगों) की चपेट में आ गए, जिससे उनमें आग लग गई। हाल के दिनों में इस तरह की यह सातवीं घटना है।